D
496
H 107
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1190/10121

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 496

891.431
M726 K

199 No 5
496

श्री लाजपति शहीद माला का पांचवां पुष्प ☞

क्रांति का पुजारी

स्व० सरदार भगतसिंह

ले० व प्र०- श्रीमोहनलाल 'अरमान' कानपुर।

द्वितीयवार) सर्वाधिकार स्वरक्षित मूल्य)।।।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
14 DEC. 1931

891.431
LISK

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 496
Date 11.12.71
GOVT. OF INDIA

• वन्देमातरम् •

क्रांति का पुजारी

ईश्वर—प्रार्थना

भक्त वत्सल प्रभु कृपा निधान ।

दया मय दीन बन्धु भगवान ॥

दोहा-जन रक्षक जगदीश्वर, अखिल बिश्व करतार ।

प्रणत पाल करुणायतन, बन्दो बारम्बार ॥

शुद्ध हो हृदे प्रथम कर ध्यान । ॥ दयामय०

दोहा—मङ्गल मय आनन्द मय, बिनय करूं करजोर ।

दया द्रष्टि अब कीजिये, प्रभु भारत की ओर ॥

हो रहा दुखित ये देश महान । दयामय० ॥

दोहा—बलि विद्या शुभ कर्मगुण, सत्यआत्म सन्मान ।

प्रभु बिलीन हो रहे सब परतन्त्रता में ज्ञान ॥

पुकारे तुम्हे ऋषी सन्तान । दयामय० ॥

दोहा—हरन ताप त्रिशूल भय, प्रभू शान्ताकार ।

आओ 'मोहन, लीजिये, भारत में अवतार ॥

यही हम सब मांगे बरदान । दयामय०॥

———

ज़ुल्म न कर ज़ुल्मी सरकार।

दमन सितम गरसे न मुअतरिब, नही जेल का खौफ़ है गालिब।
धमकी दिखलाना बेकार॥ ज़ुल्म॥
सीना सिपर खड़े हैं हम सब गोली भी चलवाले तू अब।
दिल में रहे न कोई गुबार॥ ज़ुल्म०॥
हम गुलाम अब नहीं रहेंगे, होगी जो तकलीफ सहेंगे।
हमको है भारत से प्यार॥ ज़ुल्म०॥
वीरो उठो ख़्वाब गफ़लत से, बढ़े चलो आगे हिम्मत से।
खुद हो वदू ज़ालोले ख़्वार।
ज़ुल्म न कर ज़ुल्मी सरकार॥

॥ गजल ॥

तुझसे था फख्र हिंद को सरदार भगत सिंह।
तू रहवरे था क़ौम थो गमख्वार भगत सिंह॥
थो खुशनुमां था फूल हजारा जहां में एक।
तुझसे था चमन हिंद का गुलजार भगतसिंह॥
तू ने जो इन्क़िलाब के नारे किये बुलन्द।
हैरत में शशि शालो है सरकार भगत सिंह॥
वो जोश नव जवानों में उमड़ा है तुझसे आज।
बांधे कफन को सर पे हैं तय्यार भगतसिंह॥
तुझको पसन्द थी न गुलामी की जिन्दगी।
"अरमां" चढ़े थे हंसते हुये दार भगतसिंह॥

॥ ग़ज़ल ॥

सितमगर बता आसमां कैसे कैसे ।
हुये ज़ुल्म हम पर कहां कैसे २ ॥
तवारीख के वर्क पेशे नजर हैं ।
चढ़े दार पर नौजवां कैसे २ ॥
दिखाए गए पेट के बल जमीं पर ।
सताए गए मेहरबां कैसे २ ॥
दमन से सितम से न डरना बहादुर ।
अभी और हों इम्तिहां कैसे २ ॥
करायेंगे आजाद हम मुल्क अपना ।
दिखायेंगे रंग हुक्मरां कैसे २ ॥
मगर मुश्किलें हैं गरीबों की 'अरमां' ।
बने संग दिल बदगुमां कैसे कैसे ॥

॥ ग़ज़ल ॥

प्रजातन्त्र साम्यवाद, इन्क़िलाब जिन्दाबाद ।
कुदरत के करश्मे नयाब, होने को अब है इन्किलाब ।
फिर न रहेंगे पूंजीवाद, इन्क़िलाब जिन्दाबाद ॥
गुजरा हुआ जमाना एक, कहने को है किसाना एक ।
तुमको जरूर होगा, याद इन्क़िलाब जिन्दाबाद ॥
आलम रहा है ये पुकार, नवजवानो होशियार ।
झूठे मजहबी हैं फिसाद, इन्क़िलाब जिन्दाबाद ॥
होंगे स्वतन्त्र अब गुलाम, "अरमां,, कहेंगे किसको राम ॥
हिन्दू मुसलिम एतहाद, इन्क़िलाब जिन्दाबाद ॥

बहरतवील

अब जेरे ज़मी पहुँचा के मुझे।
मुझ सोते हुये को जगाता है क्यों॥
आख़िर क़दमो से मज़ार मेरा।
ऐ यार मेरे ठुकराता है क्यों॥
आ मेरे मजार में शामो शहर।
अब दस्त दुआ के उठाता है क्यों॥
रोशन है दाग़ जिगर अपने।
रहने दे चिराग जलाता है क्यों॥
हम राह रकीबो को लाकर॥
अपनी अब शक्ल दिखाता है क्यों।
रहने दे पड़ा मरक़द में मुझे।
अब और जलों को जलाता है क्यों।
इन्साफ़ है तेरे यहां भी नहीं॥
मुझको ऐ चर्ख़ रुलाता है क्यों।
गफलत में पड़ा रहने दो मुझे॥
अब और कयामत ढाता है क्यों॥
तकसीर खता कुछ भी तो बता।
ओ फितने गर अजमाता है क्यों॥
अब नामों निशां को मिटा के मेरा।
अपना एहसान जताता है क्यों॥

हमने की पसन्द गिजा गम की ।
अब न्यामत और खिलाता है क्यों ॥
पीते हैं खूने जिगर हरदम ।
तू हयात का जाम पिलाता है क्यों ॥
ऐ इश्के मसीहा गम में तेरे ।
मरता हूँ नजर कर जिलाता है क्यों ॥
वरना तू कहेगा अभी मुझसे ।
आहों से चर्ख हिलाता है क्यों ॥
कर खौफ खुदा कर खौफ खुदा ।
नाहक दिल में शरमाता है क्यों ॥
बाकी हो अगर "अरमां" दिलमें ।
वो भी तो निकाल छिपाता है क्यों ॥

॥ गजल ॥

वो अपनी तेग जफ़ा सुर्ख फाम करते हैं ।
तो हम बहश्त में अपना मुकाम करते हैं ॥
देखते जाओ मुहब्बत के असर की खिदमत ॥
किस तरह मुल्क का हम इन्तिजाम करते हैं ॥
खौफ गालिब नहीं दिलमें है जेल खाने का ।
दमन सितम की न परवा मुदाम करते हैं ॥
ये वो काले हैं डसे जिनको न आती है लहर ॥
जहां में इन्किलाब भी गुलाम करते हैं ॥
अगर है जोशे वतन तो स्वराज्य ही लेंगे ।
कश मकश रोज की वरना तमाम करते हैं

मुल्क आजाद हो बस दिल में तमन्ना है यही ।
फिक्र 'अरमान, यही सुबाः शाम करते हैं ॥

• स्व० भगतसिंह •

तुझी से गुलजार हो रहा था, ये हिंद का पुर चमन भगतसिंह ।
तुम्हारी क़िस्मत को आफ़रीसद निशार अहलेवतन भगतसिंह ।
नहीं था इन्साफ ट्रिब्यूनलको जो हुक्म सूली था हुक्मरां का ।
गुरूब यों आफताब होगा, हमारे भारत के आसमां का ॥
वो दर्द कौमी था दिल में तेरे, अज़ब ज़िक्र तेरी खुश जबांका ।
तेरी परेशानियों से उभड़ा, वो जोश हर एक नौजवां का ॥
बनाना आजाद मुल्क को था, यही थी तुझको लगनभगतसिंह ।
तुम्हारी क़िस्मत को आफरीसद, निशार अहलेवतन भगतसिंह ।
वो तेरी निस्वार्थ देश सेवा जो मुल्क बेदार देखते हैं ।
तेरे तसौव्वर में नवजवानों को चढ़ते हम दार देखते हैं ॥
वो वीर कुरबानियों से तेरे पशेमा अग़ियार देखते हैं ।
तमाम मखलूक तेरे ग़म में बना यों लाचार देखते हैं ॥
गरजते थे जेल सीखचों से वो केहरी शेरबन भगतसिंह ।
तुम्हारी क़िस्मत को आफरीसद निशार अहलेवतन भगतसिंह
तेरी दिलेराना देख हिम्मत वो चर्ख़ चक्कर में आरहा था ॥
नहीं था खौफे खुदा सितमगर गजब के फितने उठा रहा था ।
वो खुदगरज पालसी से दुश्मन जुल्म जालिमाना ढा रहा था ॥
जो शर्तेंथी सांधिकी उन्ही से, गरज कि मतलब बना रहा था ।
वो सूरते इनक़िलाब होने को बांधे थे सर कफन भगतसिंह ॥
तुम्हारी क़िसमत को आफ़रीसद निशार अहलेवतन भगतसिंह

चढ़े वो शूली पे शेर हंसते इलाही इन्साफ ये कहां का।
तमाशा होने को है कयामत उबल रहा खून नौजवां का॥
वो मौत ने शानदार तेरी बदल दिया रङ्ग आसमां का।
स्वराज्य होने को हिंद में है खतम हुआ जोर बदगुमां का॥
वो राधे श्यामो श्याम मोहन रामनाथ दुर सखुन भगतसिंह।
तुम्हारी क़िस्मतको आफरीसद निशार अइखेबतन भगतसिंह।

गजल

रङ्ग दिखलाती है क्या तर्जे हकूमत आपकी।
मुजतरिब आलम ये है नज़रे इनायत आपकी॥
दिलको दिलसे होती राहत अब हुआ रोशन मुझे।
यास में भी दर्द की बनती थी सूरत आपकी।
जिन्दगी का लुफ्त ये हासिल मुहब्बत में हुआ॥
इज्जतो हुरमत अई मानी नसीहत आपकी।
आरजू उम्मीदो हशरत का किये बैठे है खून॥
सख्त मायूसी का बायस हैं ये उलफत आपकी।
जंगे आजादी के दिन गुजरे नहीं हैं वो अभी।
देखली जो कुछ भी थी सरकार ताक़त आपकी॥
हंसते २ होंगे हम कुरबान अपने धर्म पर।
सख्तियों से बढ़ नहीं सकती है इज्जत आपकी॥
बुलबुले हम सब हैं 'अरमा, ये हमारा है चमन।
हमको मुतलक़ है नहीं सरकार दहसत आपकी॥

सदाये वतन

आर्य वीरो जरा ये दिखाते "
मुल्क आजाद अपना बनाते चलो
शै—है सितम तुमको गुलामो से मुहब्बत हो गई
गैरके कदमो में सर रक्खा तो इज्जत हो गई
बस जमाने को अब ना हंसाते चलो " आर्य ॥
शै-पूछते हैं आज हम तुमसे बताना तो जरा
है गुलामौ का कोई मजहब सुनाना तो जरा
अपनी हस्ती को खुद क्यौ मिटाते चलो ॥ आर्य
शै—बे खता बे जुर्म आए दिन सताते हैं तुम्हें
ये गुलामी में मजा मिलता बताते हैं तुम्हें
जुल्म जालिम का अबतो हटाते चलो " आर्य
शै—है यही कर्तव्य बस चैनो अमन के वास्ते
बांध लो सर से कफन हुब्बे वतन के वास्ते
दोस्त "मोहन,, मुहब्बत निभाते चलो
मुल्क आजाद अपना बनाते चलो

नोट-हिंदू समाज के मूल पतन का कारण जहां और अन्य बातें हैं वहां ए रहस स्वांग मण्डलियां भी एक है इनके कुरुच पूर्ण गन्दे दुराचार फैलाने वाले तमासौ काप्रभाव गाँव जिले तहसीलो में रहने वाली अनपढ़ जनता पर बहुत बुरा पड़ा है आशा है कि विचारशील महानुभाव इस भयंकर होने वाले अनर्थ की ओर अवश्य ध्यान देगें

स्व० पंजाब केशरी लाला लाजपति राय की पूर्ण स्मृती में

श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय

दिल चस्प फड़कते हुये सुन्दर मनोहर गानों से परिपूर्ण

पुस्तकों का सूचीपत्र

बलिदान	,,	,,	,,	,,	मूल्य	)॥।
विशाल हिन्दू संगठन		,,	,,	,,		)॥।
साम्यवाद	,,	,,	,,	,,		)॥।
देशभक्त की पुकार	,,	,,	,,	,,		)॥।
क्रांति का पुजारी	,,	,,	,,	,,		)॥।

नोट—हर जगह गाने वाले प्रचारकों की जरूरत हैं जो घूम फिर कर जनता में इन पुस्तकों का प्रचार कर सके अलावा कमीशन के उनको और भी आर्थिक सहायता मिल सकती है पत्र व्योहार के लिए जवाबी कार्ड आना आवश्यक है,

पुस्तक मिलने का पताः—

श्री लाजपति शहीद पुस्तकालय

नौघड़ा—कानपुर।

शङ्कर प्रेस, नौघड़ा-कानपुर।